लोक साहित्य

अवधारणा :-

लोक साहित्य अपनी विभिन्न विशेषताओं के कारण महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। जन-संस्कृति का जैसा सच्चा तथा सजीव चित्रण इसमें उपलब्ध होता है वैसा अन्यत्र नहीं। लोक साहित्य के अन्तर्गत कई विधाएँ आती हैं। जिनमें लोक-कथा संसार के समस्त कथा-साहित्य का जनक है और लोकगीत सकल काव्य की जननी है। हमारे देश में लोक-साहित्य का अध्ययन चिर उपेक्षित विषय रहा है। परमात्मा की अद्भुत सृष्टि यह संसार है, पुराणों के अनुसार इस संसार में 84 लाख योनियाँ हैं। महाकवि तुलसीदास ने अपने महाकाव्य 'रामचरितमानस' में इसका संकेत किया है-

आकर चार लाख चौरासी। जीव भ्रमति यह तह अविनाशी।।

इन चौरासी लाख योनियों में मनुष्य शरीर यानि योनि को सर्वश्रेष्ठ बतलाया गया है-

बड़े भाग्य मानुस तन पावा। वेद पुरान संत मत गावा।।

कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैले हुए भू-भाग पर पनपता हुआ मानव समाज भारतीय लोक है। भारतीय लोक-जीवन हमारे सुदीर्घ इतिहास का अमृत फल है। जो कुछ हमने सोचा, किया और सहा उसका प्रकट रूप हमारा लोक-जीवन है। लोक शब्द की अमूल्य निधि है। डॉ॰ वासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा है कि "लोक हमारे जीवन का महासमुद्र है, इसमें भूत, भविष्य, वर्तमान सभी कुछ संचित है।..... लोक पृथ्वी, मानव इसी त्रिलोकी में जीवन का कल्याणतम रूप है।" लोक की अवधारणा के पीछे जो कारक तत्त्व है, वह है- एक असभ्य और अशिक्षित आप चाहें तो मूर्ख भी कह सकते हैं।

परिभाषा :- लोक साहित्य लोक जीवन की अभिव्यक्ति है वह जीवन से घनिष्ट संबंध है। लोक साहित्य एक पारिभाषिक शब्द है जो लोक तथा साहित्य से मिलकर बना है। साधारण अर्थ में परिभाषित करते हुए कह सकते हैं कि- लोक मानव समाज का वह वर्ग है जो आभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पांडित्य की चेतना और पांडित्य के अहंकार से शून्य है, जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है। ऐसे लोक की अभिव्यक्ति में जो तत्व मिलते हैं वह लोक तत्व कहलाते हैं।

डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय के अनुसार -

" आधुनिक सभ्यता से दूर, अपनी सहज तथा प्राकृतिक अवस्था में वर्तमान, तथाकथित असभ्य एवं अशिक्षित जनता को 'लोक' कहते हैं जिनका जीवन-दर्शन और रहन-सहन प्राचीन परम्पराओं, विश्वासों तथा आस्थाओं द्वारा परिचालित एवं नियंत्रित होता है। "

सभ्यता के प्रभाव से दूर रहने वाली, अपनी सहजावस्था में वर्तमान जो निरक्षर जनता है उसकी आशा-निराशा, हर्ष-विषाद, जीवन-मरण, लाभ-हानि, सुख-दुख आदि की अभिव्यंजना जिस साहित्य में प्राप्त होती है, उसे लोक साहित्य कहते हैं।

Do what you can with all you have, wherever you are. – Theodore Roosevelt

लोक साहित्य का महत्व :-

भारत में लोक साहित्य की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। संस्कृत में लोक साहित्य की उत्पत्ति तथा विकास की कथा बड़ी मनोरंजक है। सुदूर प्राचीन काल में किस प्रकार लोक साहित्य का प्रचार हुआ और किस प्रकार वह भिन्न-भिन्न शताब्दियों से होकर आज अपनी स्थिति को बनाए हुए है - यह विषय नितांत विचारणीय एवं मननीय है।—

(i) लोक सर्वोपरि है।

(ii) लोक का अध्ययन बुद्धि का कौतूहल नहीं, हृदय की बात है।

(iii) लोक सम्पर्क के बिना अन्य सब शास्त्र अधूरे है। चाहे कितना भी पण्डित हो।

(iv) लोक का अमृत निस्पंद जिस शास्त्र में नही मिला, वह निष्प्राण रहता है।

(v) जो ज्ञान लोकहित के लिए नहीं वह अधूरा है, वह मानवीय चिंतन का बुद्धा फल है।

(vi) जो शास्त्र लोक के साथ नहीं जुड़ा वह बुद्धि का छलावा है।

(vii) लोक और वेद में जब भी विवाद हुआ लोक की जीत हुई।

(viii) लोक कहा सुनी की नहीं, देखा-देखी में ज्यादा विश्वास करता है।

लोक साहित्य की प्रवृत्तियाँ :-

(i) लोक साहित्य सामान्यीकृत होता है।
(ii) लोक साहित्य लोकहित की चिंता करता है।
(iii) लोक साहित्य प्रायः वाचिक परम्परा का साहित्य है।
(iv) लोक साहित्य में राग तत्व की प्रधानता होती है।
(v) लोक साहित्य में ग्रामीण जन और उसकी संस्कृति का चित्रण मिलता है।
(vi) लोक साहित्य में लोकोक्तियों एवं मुहावरों का वर्चस्व रहता है।
(vii) लोक साहित्य लोक और मनुष्य के गहरे संबंधों की अभिव्यक्ति है।
(viii) लोक साहित्य नैतिकता प्रधान रहता है।
(ix) लोक साहित्य में विश्वास और धर्म की अभिव्यक्ति रहती है।
(x) लोक साहित्य आस्थापरक होता है।
(xi) लोक साहित्य जीवन की घटनाओं से संबंधित है।
(xii) लोक साहित्य लोगों के दैनिक क्रियाओं से संबंध रखती है।
(xiii) लोक साहित्य रीति-रिवाज को जीवित रखने वाला साहित्य है।

लोक साहित्य का वर्गीकरण :-

लोक-साहित्य को जन-जीवन का दर्पण कहा जाए तो इसमें कुछ अत्युक्ति नहीं होगी। लोक-साहित्य जनता के हृदय का उद्गार है। सर्वसाधारण लोग जो कुछ सोचते हैं और जिस विषय की अनुभूति करते हैं उसी का प्रकाशन उनके साहित्य में पाया जाता है। ग्रामीण जनता विभिन्न संस्कारों और ऋतुओं में गीत गा-गा कर अपना मनोरंजन करती है। कुछ सूक्तियों में - जिनका निर्माण जनता के अनुभव पर आश्रित है - ऐसी अनुभूतियाँ पायी जाती हैं जिनकी उपलब्धि अन्यत्र नहीं हो सकती है। इस प्रकार हम लोक साहित्य को प्रधानतः पाँच भागों में विभक्त कर सकते हैं -

(i) लोक-गीत
(ii) लोक-गाथा
(iii) लोक-कथा
(iv) लोक-नाट्य
(v) लोक-सुभाषित।

(i) लोक-गीत :-

लोक साहित्य के अंतर्गत लोकगीतों का प्रमुख स्थान है। जन-जीवन में अपनी प्रचुरता तथा व्यापकता के कारण इनकी प्रधानता स्वाभाविक है। लोक साहित्य के जिन विभिन्न भेदों का उल्लेख पहिले किया गया है, उनमें पचास प्रतिशत से भी अधिक लोकगीतों की संख्या है।

Imagine your life is perfect in every respect; what would it look like? – Brian Tracy

ये गीत विभिन्न उत्सवों तथा ऋतुओं में गाए जाते हैं। डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने भारतीय तथा पाश्चात्य लोक साहित्य का गंभीर मनन तथा अनुसंधान करने के उपरान्त लोक साहित्य को छः श्रेणियों में विभक्त किया है -

(क) संस्कार संबंधी गीत,
(ख) ऋतु संबंधी गीत,
(ग) व्रत संबंधी गीत,
(घ) देवता संबंधी गीत,
(ङ) जाति संबंधी गीत,
(च) श्रम संबंधी गीत।

(क) संस्कार संबंधी गीत :-

भारतीय जीवन में धर्म का प्रमुख स्थान है। हमारे जीवन में धर्म का स्थान सर्वोपरि होता है। जन्म से लेकर मृत्यु के बाद तक इस देश के लोगों का जीवन संस्कारों से सम्बद्ध है। हमारे धर्मशास्त्रियों ने बहुत ही संस्कारों का विधान किया है, जिनमें गर्भाधान, पुंसवन, पुत्र-जन्म, मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह, गवना और मृत्यु प्रधान हैं। मृत्यु के अवसर के गीत बड़े ही कारुणिक तथा हृदय-विदारक होते हैं। किसी प्रिय व्यक्ति, पति या पुत्र के मरने पर उसकी स्त्री या माता उस मृतात्मा के गुणों का वर्णन करती हुई रोती और विलाप करती है। पुत्र के जन्म के अवसर पर सोहर गाया जाता है। "गावहि मंगल मंजुल बानी।
सुनि कलरव कलकंठ लजानी।।"

पुरावो

(ख) ऋतु संबंधी गीत :-
जहाँ लोकगीत की बात आती है वहाँ ऋतु या त्योहार स्वाभाविक रूप से आ जाता है। वर्षा, बसन्त आदि ऋतुओं के आने पर जन जीवन में जो नवीन उल्लास उत्पन्न होता है, उसकी अभिव्यक्ति लोक-गीतों में पायी जाती है। यदि वर्षा (आषाढ़) के दिनों में किसान आल्हा गा-गाकर अपना मनोरंजन करता है, तो सावन में कजली गाकर अपने हृदय की पीड़ा को दूर करता है। फागुन में होली या फगुआ गीत गाकर मनोरंजन करता है।

(ग) व्रत संबंधी गीत :-
विभिन्न व्रतों के अवसर पर विभिन्न गीत गाये जाते हैं। श्रावण शुक्ला पंचमी नाग पंचमी के अवसर पर नाग (सर्प) देवता संबंधी गीत गाये जाते हैं। भाद्र मास कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को 'बहुरा' का व्रत, कार्तिक पूर्णिमा के पहले छठ व्रत स्त्रियों द्वारा रखा जाता है। इस अवसर पर खूब गीत गाए जाते हैं।

(घ) देवता संबंधी गीत :-
भारत के विभिन्न धर्मों तथा सम्प्रदायों में भिन्न-भिन्न देवताओं की आराधना तथा पूजा की जाती है। इनकी स्तुति में गीत गाए जाते हैं। राम, कृष्ण, हनुमान तथा गंगा माता संबंधी गीत इस कोटि में आते हैं।

इसके अतिरिक्त छठी माता, शीतला माता, चैती दुर्गा माता संबंधी गीत भी इसी श्रेणी में आते हैं। देवताओं संबंधी गीतों के लिए उत्तर-प्रदेश राज्य काफी संपन्न है। इसके उत्तरी क्षेत्र में जागर गीत गाया जाता है जो विभिन्न देवताओं की स्तुति में किया जाता है। आदिवासियों के लोकगीतों में भी इनके देवताओं संबंधी गीत देखने को मिलता है।

(ङ) जाति संबंधी गीत :- हमारे देश में कुछ ऐसे भी गीत हैं जिन्हें कुछ विशिष्ट जातियाँ ही गाती हैं। उदाहरण के लिए बिरहा को लिया जा सकता है। यह अहीर जाति के लोगों का राष्ट्रीय या जातीय गीत है। वर्षा ऋतु में एक विशेष जाति के लोग (नट) ढोल को गले में बाँधकर 'आल्हा' गाते फिरते हैं।

(च) श्रम-गीत संबंधी गीत :- कुछ ऐसे भी गीत गाये जाते हैं, जो किसी विशेष कार्य करते समय गाये जाते हैं। उदाहरण के लिए धान को रोपते समय स्त्रियाँ जो गीत गाती हैं, उन्हें रोपनी के गीत कहते हैं। इसी प्रकार खेत को निराते समय या सोहते समय जो गीत गाए जाते हैं, वे निरवाही या सोहनी के नाम से प्रसिद्ध हैं। तेली तेल को पेरते समय अपने हृदय के भावों का मन्थन करता हुआ जिन पदों का सस्वर रूप से गाता है उसे 'कोल्हू के गीत' की संज्ञा दी जाती है।

Don't let yesterday take up too much of today. – Will Rogers

(ii) लोक गाथा :-

लोकगीत वे गीत हैं जिनमें कथानक प्रायः स्वल्प होता है। गेयता ही उसका प्रधान गुण है परंतु लोकगाथाओं में कथावस्तु की ही प्रधानता होती है। गेयता इसमें गौण स्थान रखती है। लोकगीत छोटे आकार में होती हैं परन्तु लोकगाथा अपने कथानक के कारण बहुत बड़ी होती है।

संस्कृत साहित्य में 'गाथा' शब्द का प्रयोग गेय पदावली के अर्थ में प्राचीन काल से होता चला आया है। हाल की 'गाथा सप्तशती' - जिसमें श्रृंगार रस से भरी सात सौ आर्याओं का संग्रह है। गाथा लोगों के वैयक्तिक घटनाओं का सजीव वर्णन है। इसमें कथानक रूप में गेय पद शामिल है।

(iii) लोक कथा :-

लोक साहित्य के वर्गीकरण में लोक-कथाओं का प्रमुख स्थान है। ये अपनी सरसता और लोकप्रियता के कारण महत्त्वपूर्ण स्थान रखती है। माताएँ सुन्दर कहानियाँ सुनाकर अपने बच्चों को प्रेरणा एवं सीख देती हैं। वहीं बचपन में दादी दादा नानी - नानी की कहानी सुनकर मनोरंजन एवं आनन्द प्राप्त करते थे। बालिकाएँ अपने भाई की सुख और समृद्धि के लिए पिंडिया का व्रत करती हैं और कार्तिक में भ्रातृ- द्वितीया से लेकर अगहन की शुक्लपक्ष की दूज तक - पूरे एक महीने तक नियमित रूप से पिंडिया

की कथा गाथ भी गुनती है।

(iv) लोक नाट्य :-
लोक साहित्य का महत्वपूर्ण श्रेणी है। इसमें गीत, नृत्य और संगीत की त्रिवेणी प्रवाहित होती है। गीत के साथ संगीत की योजना बड़ा आनन्द प्रदान करती है, परन्तु इसके साथ ही यदि नृत्य भी हुआ तो आनन्द और दुगुना हो जाती है। लोक साहित्य में लोक नाट्य बड़ा ही लोकप्रिय सिद्ध हुआ है। इसमें लोक समाज की समस्याओं को केन्द्र में रखकर पात्रों के माध्यम से दिखाया जाता है और अन्त में समाधान भी बताया जाता है। गुजरात में 'गर्बा', मालवा में 'माँच' नामक लोकनाट्य प्रसिद्ध है।

(v) लोक सुभाषित :-
ग्रामीण जनता अपने दैनिक व्यवहार में सैंकड़ो मुहावरों, कहावतों, पहेलियों, सूक्तियों और सुभाषितों का प्रयोग करती है। इन मुहावरों और कहावतों में चिरसंचित अनुभूत-ज्ञान-राशि भरी पड़ी है। इनके अध्ययन से हमारी सामाजिक और धार्मिक प्रथाओं का चित्रण उपलब्ध होता है। कुछ ऐसी भी सूक्तियाँ उपलब्ध होती हैं, जिनमें नीति के वचन कहे गये हैं। खेती और वर्षा के सम्बन्ध में घाघ की जो उक्तियाँ प्रसिद्ध हैं, इनमें स्वानुभूति की मात्रा अत्यधिक है।

पशुओं की पहचान भी घाघ को अच्छी थी। उन्होंने अच्छे बुरे पशुओं की जो पहचान बतलायी है, वह बिल्कुल ठीक है। पालने के गीत तथा खेल के गीत भी इसी कोटि में रखे जा सकते हैं। माताएँ बच्चों को पालने पर सुला कर मधुर गीत गाती है जिन्हें सुनते सुनते बच्चे सो जाते हैं। बालक खेल खेलते समय गीतों को भी गाते रहते हैं।

निष्कर्ष :-

इस तरह से लोक साहित्य व्यवहारिक जीवन का साहित्य है। गाँव के लोग अपने दैनिक कर्मों को अपने गीतों के द्वारा मनोरंजन करते हैं, जो उनकी क्षेत्रीय बोली या भाषा में होती है। जन-जीवन को सिंचित एवं उल्लास से भरने के लिए लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा आदि का सहारा लिया जाता है। गाँव के लोग अपने दैनिक व्यवहार में गाली का प्रयोग प्रचुर मात्रा में किया करते हैं। इन गालियों में समाज के अनेक प्रथाओं का उल्लेख यत्र-तत्र पाया जाता है। अतः हम कह सकते हैं कि लोक साहित्य जन-जीवन को हरा-भरा रखने वाला साहित्य है।

If you win, you need not have to explain...if you lose, you should not be there to explain! - Adolf Hitler